ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
Indian Scholar
An International Multidisciplinary Research e-Journal

कटाक्ष/व्यंग्य के परिप्रेक्ष्य में मृच्छकटिकप्रकरण

डॉशर्मा हेमन्त
सहायक प्राध्यापक संस्कृत साहित्य
शासमहाविद्यालय संस्कृत स्नातकोत्तर .वै.श्री.दू.
रायपुर(छ(.ग.
ईमेल -pandit.hemant2010@gmail.com

शोधसार

सुख का मानव समन्वित से भावों विभिन्न आदि ईर्ष्या-परोपकार-करुणा-दया-मोह-दुःख-से नवरसों इसीलिये । है होता आकर्षित प्रति इनके ही स्वतः स्वभाव सहज सामाजिक । है गया माना कृति सर्वश्रेष्ठ की विश्व को जीवन मानवीय समन्वित व्यवहार में मनुष्य जब कभी हर्ष अनुभव करता है,है होता महसूस उदासीन कभी, है चाहता कहना में वक्ररूप को बात अपनी कभी,है चाहता करना मनोरंजन कभी मनुष्य में व्यवहार लोक ।सामान्य है होता सृजन का कटाक्ष अथवा का व्यंग्य तब च का सीउ है करता व्यंग्यादि-कटाक्ष से प्रकार जिसित्रण मृच्छकटिकप्रकरण के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । चूँकि मृच्छकटिकप्रकरणं लोकजीवन पर आधारित प्रकरण हैहै देती दिखाई स्पष्टतया झाँकी की लोकजीवन सामान्य इसमें, प्रकाश पर तत्त्वों व्यंग्यात्मक विद्यमान इसमें लेकर को शीर्षक सामान्य अतःडाला गया है । सामान्य अध्येता भी प्रकरण के इस प्रसंग से परिचित हो इसका यही, इस विवेचन का व्यंग्य व्याप्त में प्रसंगो विभिन्न के प्रकरण । है निदर्श प्रमुख । है गया किया में शोधालेख

कटाक्ष/व्यंग्य के परिप्रेक्ष्य में मृच्छकटिकप्रकरण

काव्यशास्त्रिय आचार्यों ने संस्कृत साहित्य को इन्द्रियग्राहिता के आधार पर दृश्य व श्रव्य दो भागों में विभाजित किया है । यथा –

दृश्य श्रव्यत्वेन भेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम् [i]

इनमें जिनका अभिनय किया जा सके काव्य दृश्य वे सके जा सुना व देखा जिनको, जा सुना केवल जिनको और हैं कहलाते सकता है वे श्रव्य काव्य कहलाते हैं । दृश्य

काव्य के अन्तर्गत रूपकोपरूपक आते हैं जबकि श्रव्य काव्य के अन्तर्गत महाकाव्यादि आते हैं ।जिनमें रूपकों की संख्या दश है-

नाटकं सप्ररणकं भाणः प्रहसनं डिमः ।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति ।।[ii]

महाकवि शूद्रक द्वारा प्रणीत मृच्छकटिकप्रकरणम् रूपक भेद के अन्तर्गत आता है । प्रकरण की कथावस्तु लौकिक अथवा कवि कल्पना प्रसूत होती है । यथा-

अथ प्रकरणे वृत्तमुत्पाद्यं लोकसंश्रयम् [iii]

मृच्छकटिकप्रकरण कविबुद्धिकल्पित लोकजीवन पर आधारित है । शूद्रक ने सरल बोलचाल की भाषा में इस प्रकरण की कथावस्तु को उपनिबद्ध करके पाठकों के चित्त को सहज ही आकर्षित किया है । प्रस्तुत शोधालेख 'कटाक्ष/व्यंग्य के परिप्रेक्ष्य में मृच्छकटिकप्रकरण' विषय पर आधारित है । सामाजिक लोकव्यवहार में मनुष्य जिस प्रकार से कटाक्ष करता है काव्य,है उड़ाता हंसी,है करता हासपरि,है कसता फब्तियाँ, इसे में शब्दों सामान्य । है करता प्रस्तुत निदर्शन का प्रकार उसी कवि भी में जगत आ मारना ताने व देना उलाहना ,करना व्यंग्यदि भी कह सकते हैं । कभी इसका प्रयोग हास कभी ,में रूप कूटभाषा कभी ,में रूप के कटाक्ष कभी ,लिये के परिहास-से रूप सामान्य में रूप के वक्रोक्ति कभी तो लिये के करने सम्बोधित को अन्य और हैं स्वीकारते इसे अन्तर्गत के वक्रोक्ति कुन्तक राजानक आचार्य । है होता काव्यसौन्दर्य में इसकी अनिवार्यता प्रमाणित करते हुये कहते हैं-

वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरुच्यते[iv]

मेरा ऐसा मानना है के विश्व । सकता रह नहीं अछूता से व्यंग्य कवि भी कोई कि, में रूपों विभिन्न में रचनाओं अपनी भी ने कालिदास नाटककार एवं कवि सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यको स्थान दिया है । कालिदास विरचित मालविकाग्निमित्रं नाटक में विदूषक एवं गणदास के संवाद में गणदास की व्यंग्यात्मक टिप्पणी दृष्टव्य है । विदूषक जबरदस्ती मालविका के अभिनय में दोष निकालते हुये कहता है ब्राह्मण आपने कि, गणदा में प्रतिउत्तर इसके ,की नहीं पूजा कीस तीव्र कटाक्ष करते हुये कहता है कि, पर पेटपूजा जैसे तुम्हारे तो होता ऐसा यदि रहे कर नहीं नाटक बार पहली हम करते पूजा से अच्छी की वालों जीने।[v] इस प्रकार के अनेक उदाहरण काव्यों में देखने मिल जायेंगे ।मृच्छकटिकप्ररण में शूद्रक ने काव्यरचना में चमत्कारी इस व्यंग्य के विभिन्न आयामों का सफल प्रयोग किया है ही अलग में रचना उनकी जिससे, रहता होता परिहास-हास बीच के पत्नी-पति । है तीदे दिखलाई जीवन्तता की प्रकार में मृच्छकटिक । है और कुछ ही बात तो तब हो व्यंग्यात्मक जब यह और है में घर हमारे कि,है पूछता से नटी सूत्रधार खाने के लिये क्या नटी तव । है क्या-

आर्ये है कहता सूत्रधार तब ,है बताती नाम के वस्तुओं कई उसे ! क्या यह सब हमारे घर में है तब नटी परिहासपूर्वक कटाक्ष करते हुये कहती है यह सब घर में नहीं बाजार में है-

सूत्रधारः अस्ति किम् किं -?

नटीदधि घृतं गुडौदनं तद्यथा- तण्डुलाः आर्येणात्तव्यं रसायनं सर्वमस्ति इति ते एवं , । आशंसन्ताम् देवा

सूत्रधारः सर्वमस्ति गेहे अस्माकं किम् -? अथवा परिहससि ?

नटी– (प्रकाशं) । तावत् परिहसिष्यामि -(स्वगतम्) आर्य ! अस्ति आपणे ।[vi]

शकार चेट एवं विट वसन्तसेना का पीछा कर रहे हैं उस समय चेट वसन्तसेना से कहता है खाने में मात्रा पर्याप्त तुम्हें जिससे करो सेवन का शकार इस वसन्तसेने हे , तो यहाँ इनके अरे -है कहता हुआ करते व्यंग्य और ,जायेगा मिल मांस मद्य लिये के कुत्ते कि ,है होता मांस इतनाभी उसको नहीं खाते हैं –

चेटः। मत्स्यमांसकम् खादिष्यति ततः राजवल्लभं च रमय -

एताभ्यां मत्स्यमासाभ्यां श्वानो मृतकं न सेवन्ते ।।[vii]

इसमें शकार की दुष्टता पर बड़ी ही चतुराई से चेट द्वारा कटाक्ष किया गया है । संस्कृत रूपकों में पात्रीयसंवादों में कटाक्षता सहज ही नाट्य उत्कर्ष को बढ़ा देती है । कभी कभी यह कटाक्षता वक्रोक्ति के रूप में प्रयुक्त होकर प्राणरक्षा का हेतु भी बन जाती है । प्रकरण में दुष्ट शकार विट से कहता है उस वसन्तसेना यह कि , ऐसा आप अतः है ही ओर बाँयी यहाँ घर उसका और है चाहती को चारुदत्त दरिद्र करियेजिससे वह वसन्तसेना हमारे हाथ से बचकर न निकले ।विट चूँकि वसन्तसेना को बचाना चाहता है इसलिये वसन्तसेना को सम्बोधित करते हुये शकार से वक्रोक्ति में कहता है है ओर बाँयी घर का चारुदत्त उस क्या -? विट के इस कथन को सुनकर वसन्तसेना समझ जाती है घर का चारुदत्त कि ,बाँयी ओर है । इस प्रकार विट के व्यंग्य कथन व समझदारी से वसन्तसेना को बचने का अवसर मिल जाता है । यथा-

शकारः करोतु तथा परिभ्रश्यति न एषा हस्तात् मम तव यथा ,गेहम् वामतस्तस्य- । भावः

विटः वसन्तसेना कथं । मूर्खः तदेवोदाहरति परिहर्त्तव्यं यदेव (स्वगतम्) - आर्यचारुदत्तमनुरक्ता । सुष्ठु खल्विदमुच्यते तद्गच्छतु । सङ्गच्छते सह रत्नेन रत्नं - । गेहम् सार्थवाहस्य वामतस्तस्य काणेलीमातः (प्रकाशं) । मूर्खेण किमनेन[viii]

वसन्तसेना को सार्थवाह का घर का पता मिल गया है किन्तु उसके द्वारा पहनी हुई माला से गन्ध आ रही है शकार जिससे ,उसे पकड़ सकता है अतः वसन्तसेना को

शकार के चंगुल से बचाने के लिये विट पुनः वक्रता का आश्रय लेकर कहता है कि, पायलों और खुशबू की माला तुम्हारी परन्तु हो रही नहीं दिख मुझे तुम ही भले बात इस की विट ।वसन्तसेना तुम हो रही सुन,देगी ही बता पता मुझे झनकार की सुन कोकर और समझकर तुरन्त माला व पायल को उतार देती है । यथा-

विटः वसन्तसेने (जनान्तिकम्)-!
कामं प्रदोषतिमिरेण न दृश्यसे त्वं
सौदामिनीव जलदोदरसन्धिलीना ।
त्वां सूचयिष्यति तु माल्यसमुद्भवोSयं
गन्धश्च भीरु! मुखराणि नुपुराणि ।।
वसन्तसेना गृहीतं श्रुतं (स्वगतम्)-च ।[ix]

व्यंग्य का एक रूप परिहास भी होता है मृच्छकटिकं के चतुर्थाङ्क में चेटी विदूषक को वसन्तसेना का घर दिखाते हुये ले जा रही है वह बाद के करने पार द्वार मसप्त, तब है बताती में बारे के भाई के वसन्तसेना विचित्रवेषभूषाधारी को विदूषक कह हुये करते व्यंग्य विदूषकता है भाई का वसन्तसेना यह करके तप वर्ष कितने कि, -यथा । बना

विदूषकःभवति-! क एष पट्टप्रवारकप्रावृतः अधिकतरमत्यद्भुत पुनरुक्तालङ्कारालङ्कृतः अङ्गभङ्गैः परिस्खलन्नितस्ततः परिभ्रमति ?
चेटीआर्य-!एष आर्याया भ्राता भवति ।
विदूषकःआर्याय कृत्वा तपश्चरणं कियत्-ा भ्राता भवति ।[x]

कभी में प्रकरण,है जाता किया में रूप के उलाहना प्रयोग का व्यंग्य इस कभी- -है कहती हुये देते उलाहना को निशा वसन्तसेना

मूढे !निरन्तरपयोधरया मयैव
कान्तः सहाभिरमते यदि किं तवात्र ।
मां गर्जितैरपि मुहुर्विनिवारयन्ती
मार्गं रुणद्धि कुपितेव निशा सपत्नी ।।[xi]

काव्य में व्यंग्य का अपना वैशिष्ट्य है । जिस प्रकार सामाजिक जीवन में जड़ – चेतन पदार्थों के माध्यम से उलाहना के द्वारा भाव प्रकट किया जाता है उसी प्रकार काव्यादि में भी इस प्रकार के उदाहरण देखने को मिलते हैं । प्रकरण में चारुदत्त के घर जाती हुई वसन्तसेना मेघ के माध्यम से पुरुषों पर व विद्युत के माध्यम से स्त्रियों पर कटाक्ष करते हुये कहती है-

यदि गर्जति वारिधरो गर्जतु तन्नाम निष्ठुराः पुरुषाः ।
अयि विद्युदः प्रमदानां त्वमपि च दुःखं न जानासि ।।[xii]

सामान्य कथन से विलोम कथन की अभिव्यक्ति व उसका बोध कराना व्यंग्य की अपनी एक विशेषता है । प्रकरण के पंचमांक में वसन्तसेना चेटी सहित चारुदत्त के पास मिलने जाती है उसी है होती भेंट उसकी से दोनों चारुदत्त और विदूषक वहाँ, कहती हुये करते व्यंग्य चेटी तब है चाहता पूँछना कुछ से वसन्तसेना विदूषक समय ब् यह आर्या ,हैराह्मण बहुत भोला है उसके प्रत्युत्तर में वसन्तसेना कहती है बहुत चतुर है ऐसा कहो–

विदूषकः भवती आगता दुर्दिनान्धकारे प्रणष्टचन्द्रालोके पुननरीदृशे निमित्तं किं अथ-? चेटी आर्ये-! ऋजुको ब्राह्मणः ।

वसन्तसेना। भण इति निपुण ननु-[xiii]

क्वचित् यह व्यंग्य स्वाभाविक चापल्य को प्रकट करता है । प्रकरण में वसन्तसेना चारुदत्त के पुत्र रोहसेन को बहलाने के लिये कहती है तुम भी सोने की गाड़ी से खेलोगे है कहती रदनिका तब हैं कौन यह है पूछता से रदनिका रोहसेन समय उस, रोहसेन सुनकर यह है माँ तुम्हारी यहकहता है तुम झूठ बोल रही हो अगर यह मेरी माँ होती तो इतना सुवर्ण थोड़े ही इनके पास होता । रोहसेन के इस वाक्य में स्पष्ट रूप से व्यंग्य दिखाई देता है-

दारकः रदनिके-! का एषा ?

रदनिका। भवति जननी ते आर्या जातः-

दारकः आर्या यद्यस्माकं ,भणसि त्वं अलीकं रदनिके-जननी। अलङ्कृता केन तत्,[xiv]

कभी सप्तमांक के प्रकरण । है जाता हो सच भी व्यंग्य गया किया में परिहास कभी-बेड़ियाँ इनकी चेट है कहता देखकर को बेड़ियों पड़ी में पैर के आर्यक चारुदत्त में पहना बेड़ियाँ दूसरी प्रेममयी काटकर इनको आपने कि,है कहता आर्यक तब दो काट त दीब विदूषक परिहास पूर्वक व्यंग्य में कहता है तुम अब करो धारण इन्हें तुम कि, -जायेंगे जेल हम अब किन्तु गये हो बन्धनमुक्त

चारुदत्तः वर्द्धमानक-! चरणान्निगडमपनय ।

चेटः। निगडानि अपनीतानि आर्य । आज्ञापयति यदार्य-

आर्यकः। दत्तानि दृढतराणि स्नेहमयान्यन्यानि-

विदूषकःएषो ,निगडानि संगच्छस्व-Sपि मुक्तः। व्रजिष्यामः वयं साम्प्रतं ,[xv]

कभी में अष्टमांक । है होती भी प्रतीति की अर्थान्तर से माध्यम के व्यंग्य कभी-अन्य कुछ का वचनों उसके शकार किन्तु है रहा कर प्रशंसा की शकार बौद्धश्रमणक – है रहा निकाल अर्थ ही

भिक्षुःस्वाग-तं। उपासकः प्रसीदतु ,

शकारः भाव-! प्रेक्षस्व प्रेक्षस्व। माम् आक्रोशति ,

विटः ब्रवीति किं-?
शकारः नापितः किमहं । भणति मां इति उपासक-?
विटः। स्तौति भवन्तं इति बुद्धोपासक-
भिक्षुः। पुण्यः त्वं धन्यः त्वं-
शकारः भाव-! धन्यः पुण्य इति मां भणति । किमहं श्रावकः कोष्ठकः कुम्भकारो वा ?
विटः काणेलीमातः-! ननु धन्यस्त्वमिति भवन्तं स्तौति ।[xvi]

प्रकरण में पुष्पकरण्डक उद्यान में शकार एक गाना गाता है और विट से पूछता है भाव ! मैंने कैसा गाया तब शकार के डर से विट अतिशयोक्ति पूर्ण व्यंग्य में कहता है अरे ! आपका तो कहना ही क्या; आप तो गन्धर्व हैं-

शकारः भाव । गास्यामि किमपि विनोदनिमित्तं आत्मनो-! भाव! श्रुतं त्वया यन्मया गीतम् ?
विटः। भवान् गन्धर्वो किमुच्यते-[xvii]

कटाक्षता व्यंग्य की अपनी अनूठी विशेषता है । कटाक्षपूर्ण उक्तियों से किसी भी जनसामान्य के ध्यान को सहज ही आकर्षित किया जा सकता है । जब व्यक्ति अपनी बात को सामान्य रूप से नहीं कह पाता तब वह अपनी बात को कटाक्ष पूर्ण ढंग से व्यक्त करता है । यह कटाक्ष किसी व्यक्ति के विशेष व्यवस्था अथवा समाज, दूषित की पालक राजा में नवमांक के प्रकरण । है सकता हो भी ऊपर न्यायव्यवस्था पर कटाक्ष करते हुये कहता है राजा वाले वक्रदृष्टि के कारप्र इस कि, में पूर्व लोग निरपराध हजारों द्वारा के न्यायाधीशों वाले करने दूषित को शासन के -हैं रहे जा मारे और हैं गये मारे भी

ईदृशैः श्वेतकाकीयैः राज्ञः शासनदूषकैः ।
अपापानां सहस्राणि हन्यन्ते च हतानि च ।।[xviii]

संस्कृत साहित्य में विभिन्न काव्य ग्रन्थों में व्यंग्य का विभिन्न रूपों में प्रयोग हुआ है । शूद्रक के प्रकरण में भी इसका प्रयोग सामाजिक घटनाक्रमों को जीवन्तता प्रदान करता है । महाकवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् में व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष की उत्कृष्टता देखी जा सकती है । कण्व शिष्य शाङ्र्गरव कटाक्ष करते हुये राजा दुष्यन्त को कहता हैहैं रहे कह सही ही आप महाराज कि,? क्योंकि जिसने जन्म से लेकर छल बढ़ी-पली में आश्रम जो और रही दूर से प्रपञ्चों सांसारिक जो,सीखा नहीं कपट-ही आप,है गलत शुकन्तला वही सत्यवादी हैं ?[xix]कालिदास के अलावा अन्य कवियों की रचनाओं में भी उत्कृष्ट व्यंग्य के दिग्दर्शन कर सकते हैं । सामाजिक जीवन में हास भी काव्य । है करता मनुष्य प्रयोग का व्यंग्य लिये के कटाक्षादि-परिहास-सामान हम भी वहाँ अतः है करता अभिव्यक्त को घटनाक्रमों सामाजिक्य जीवन

की झाँकी को देख सकते हैं । काव्य में प्रारम्भ से ही व्यंग्य पूर्ण कथनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । इनके द्वारा कवि का काव्य व्यापार चमत्कार को प्राप्त करता है अतः काव्य को रुचिपूर्ण व आह्लादकारी बनाने के लिये व्यंग्य की अपरिहारता प्रतीत होती है । मृच्छकटिकप्रकरण में भी शूद्रक ने इसका निरूपण भलीभाँति किया है ।

---

[i] साहित्यदर्पणम् – 6.1 कारिका
[ii] दशरूपकम् –1.8
[iii] दशरूपकम् – 3.39
[iv] वक्रोक्तिजीवितम्- 1.10
[v] कालिदास ग्रन्थावली- पृष्ठ 590
[vi] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 12
[vii] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 38 श्लोक 26
[viii] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 48-49
[ix] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 52-53, श्लोक-1.35
[x] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 266-267
[xi] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 306, श्लोक 5.15
[xii] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 318, श्लोक 5.32
[xiii] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)-पृष्ठ 327
[xiv] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 351
[xv] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 400
[xvi] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 411-412
[xvii] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 424
[xviii] मृच्छकटिकम्(डॉ. गंगासागर राय)- पृष्ठ 564, श्लोक 9.41
[xix] अभिज्ञानशाकुन्तलम्5.25 श्लोक -यथा-

आ जन्मनः शाठ्यमशिक्षितो य-
स्तस्याप्रमाण वचनं जनस्य ।
परातिसन्धानमधीयते यै-
विद्येति ते सन्तु किलाप्तवाचः ।।